महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

मानविकी एवं भाषासंकाय

संस्कृतविभाग

एम. ए. द्वितीय सत्र

विषय – उत्तररामचरित

Code – SNKT2002

प्रथम अङ्क- I

विश्वजित् वर्मन
सहायक-आचार्य, संस्कृत विभाग

मङ्गलाचरण

इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यः नमोवाकं प्रशास्महे।
वन्देमहि च तां वाचममृतात्मनः कलाम्॥

अन्वय

पूर्वभ्यः कविभ्यः नमोवाकं प्रशास्महे, अत्मनः कलां ताम् अमृतां वाचं वन्देमहि च।

शब्दार्थ

पूर्वेभ्यः- पूर्ववर्ती कवियों को, कविभ्यः – कवियों के लिए, नमोवाकम्- प्रणाम, आत्मनः – परब्रह्म की, कलाम् – कलारूप अंश को, अमृताम् – अमर, वाचम्- वाणी को, देवताम् – देवता को, विन्देम - प्राप्त करें, इदम् – यह, प्रशास्महे – आशा करते है।

अर्थ

पूर्वकाल के कवियों को प्रणाम करके, परब्रह्म की कला स्वरूप वाग्देवी (सरस्वती) को प्राप्त करें, यह कामना करते हैं।

अलङ्कार

इस पद्य में श्लेष अलङ्कार है। श्लेष का लक्षण है-

वाच्यभेदेन भिन्ना यद युगपद्भाशणस्पृशः।
श्लिष्यन्ति शब्दाः श्लोषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा॥

अर्थात् जिसमें अर्थभेद के कारण परस्पर भिन्न शब्द उच्चारण सारूप्य के कारण एक प्रतीत होता है वह श्लेष अलङ्कर है।

छन्द

इस पद्य में अनुष्टुप् छन्द है। इसका लक्षण-

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

इस छन्द का प्रत्येक पाद का छठा वर्ण गुरु और पंचम वर्ण लघु होता है। सप्तम वर्ण प्रथम और तृतीय पाद में गुरु तथा दूसरे और चौथे पाद में लघु होता है। वाकी वर्ण का कुछ विशिष्ट नियम नहीं है। प्रत्येक अष्टम वर्ण के बाद यति होती है।

समास

नमोवाकम्- वचनं वाकः, नम इत्यस्य वाकः नमोवाकः, नमोवाकः अस्मिन् अस्तीति नमोवाकम्।

अमृताम्- अविद्यमानं मृतं यस्याः सा, ताम्।

प्रसङ्ग

प्रस्तुत इस श्लोक भवभूतिविरचित उत्तररामचरित नाटक के प्रथम अङ्क से उद्धृत है। इस श्लोक के द्वारा कवि ग्रन्थ के अरम्भ में विघ्नविघातार्थ नाट्यशास्त्रीय परम्परानुसार मङ्गल कामना किया है। पूर्वरङ्ग के अङ्गभूत इस नान्दी पद्य में कवि पूर्व काल के वाल्मीकि आदि कवियों को प्रणाम किया है।

विशेष

यह द्वादश पदों की नान्दी है। भरते के अनुसार सूत्रधार नान्दी पाठ करता है – 'सूत्रधारः पठेन्नान्दीं मध्यमं स्वरमाश्रितः'।

भास के नाटकों में 'नान्द्यन्ते ततः प्रविशति सूत्रधारः' से नाटक का आरम्भ होता है जहां नान्दीपाठ करनेवाला कुछ अन्य नट होता है।

विशेषता

'मङ्गलादीनि हि शास्त्राणि प्रथन्ते वीरपुरुषकानि' इस विशिष्ट सूक्ति को अनुसरन करते हुए ग्रन्थकर्ता आपनी रचना के पूर्व होने वाले विघ्न के विनाश के लिए नाट्यशास्त्रीय परम्परा अनुसार नमस्कारात्मक मङ्गलाटचरण किया हैं जिसके अध्ययन से पाठकों का भी मङ्गल हो सकता है। इसी को नाट्यशास्त्र में नान्दी कहते है जैसे साहित्यदर्पण में-

आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादिनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता॥

इस पद्य में पूर्वकाल के वाल्मीकि-व्यास-कालिदास आदि कवियों को नमस्कार करके परब्रह्म के अंशरूप वाणी वाग्देवी सरस्वती को नमस्कार प्रस्तुत किया है।

साहित्य दर्पण के अनुसार नांदी अष्टपदी या द्वादशपदी होती है। इस पद्य में नान्दी द्वादशपदी है।

यं ब्रह्मणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते।
उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयोक्ष्यते॥

अन्वय

यं ब्रह्मणम् इयं देवीवाक् वश्या इव अनुवर्तते तत् प्रणीतम् उत्तरं रामचरितं प्रयोक्ष्यते।

शब्दार्थ

यं- जिसको, ब्रह्माणम्- ब्राह्मण को, इयम्- यह, देवीवाक्- भगवती सरस्वती, वश्या- वशीभूता, इव- सदृश, अनुवर्तते- अनुगमन करती है, तत्प्रणीतम्- उनके द्वारा विरचित, उत्तरं रामचरितम्- उत्तररामचरित नामक नाटक को, प्रयोक्ष्यते- अभिनय करते है।

अर्थ

यजनादि षट्कर्म में निरत जिस भवभूति का यह (प्रसिद्ध) भगवती सरस्वती वशीभूता स्त्री के सदृश अनुगमन करती है, उनके द्वारा विरचित उत्तररामचरित नाटक का हम अभिनय करेंगे।

समास

उत्तरं रामचरितम्- रामस्य चरितम्, (षष्ठीतत्पुरुष समास), उत्तरं च तत् रामचरितमिति (कर्मधारय समास)

अलङ्कार

इस श्लोक में 'वश्येव' इस पद से उत्प्रेक्षा अलङ्कार हुआ है। उत्प्रेक्षा अलङ्कार का लक्षण है- 'सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्'। अर्थात् उत्प्रेक्षा अलङ्कार वहां होता है जहां प्रकृत (उपमेय) को उसके समान अप्रकृत (उपमान) के साथ तादात्म्य-सम्भावना किया जाता है।

छन्द- अनुष्टुप्

(श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम्। द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥)

गुण

प्रसाद गुण। इसका लक्षण- 'शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः। व्यप्नोत्यन्यत्प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः' ॥ अर्थात् जिस् प्रकार अग्नि का धर्म सुखा इन्धन को ज्वालाना अथवा जल का धर्म कपड़ा साफ करना होता है उसी प्रकार प्रसाद गुण सभी रसों का एक ऐसा धर्म है जिससे सामाजिक-हृदय आनन्द से भर उठता है।

रीति- 'गौडी रीति' है।

विश्वम्भरा भगवती भवतीमसूत
राजा प्रजापतिसमो जनकः पिता ते।
तेषां वधुस्तमसि नन्दिनि पार्थिवानां
येषां कुलेषु सविता च गुरुर्वयं च॥

अन्वय

भगवती विश्वम्भरा भवतीम् असूत प्रजापतिसमः राजा जनकः ते पिता। नन्दिनि ! तेषां पार्थिवानां त्वं वधुः असि, येषां कुलेषु सविता गुरुः वयं च (गुरवः)।

शब्दार्थ

भगवती- ऐश्वर्यवती, विश्वम्भरा- पृथीवि, भवतीं- आपको (सीता को), असूत- जन्म दिया, प्रजापतिसम- प्रजापति के तुल्य, राजा जनकः- विदेहराज जनक, ते- तुम्हारा, पिता, नन्दिनि- हे सौभाग्यवती, तेषाम्- उन सूर्यवंशीय (राजायों) के, पार्थिवानां- राजाओं की, त्वम्- तुम, वधुः – कुलवधु, असि- है, येषाम्- जिनके, कुलेषु- वंश में, सविता भगवान् सूर्यदेव, गुरुः- वंशप्रवर्तक, वयं च- हम भी (परामर्शदाता हैं)।

अर्थ

विश्व का भरण-पोषण करने वाली भगवती वसुन्धरा ने आपको उत्पन्न किया है, ब्रह्मजी के सदृश विदेहाधिपति जनक आपके पिता है। हे आनन्ददायिनि ! तुम उन राजाओं की कुलवधू हो जिनके कुल में सूर्य कुलप्रवर्तक और हम गुरु हैं।

समास

विश्वम्भरा – विश्वं बिभर्ति इति, प्रजापतिसमः- प्रजापतिना सम

अलङ्कार

‘प्रजापतिसम’ इस पद में प्रजापति ब्रह्मा के साथ राजा जनक का सादृश्य कल्पना के कारण उपमा अलङ्कार है।

‘जनकः पिता’ इसमें पिता शब्द का प्रयोग के कारण पुनरुक्तवदाभास अलङ्कार है। ‘सविता च’ ‘गुरुर्वयं च’ इस दोनो पद में गुरुत्वधर्म का सम्बन्ध होने से तुल्ययोगिता अलङ्कार है। इन तीनों अलङ्कार हौने से संकर अलङ्कार है।

छन्द

इस पद्य में ‘वसन्ततिलक’ छन्द है। (उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौ गः)

गुण

प्रसाद गुण

रीति

लाटी रीति है। उसका लक्षण- लाटी च मृदुभिः पदैः।

लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते।
ऋषिणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति॥

अन्वय

लौकिकानां हि साधूनां वाक् अर्थम् अनुवर्तते, पुनः आद्यानाम् ऋषिणाम् वाचम् अर्थः अनुधावति।

शब्दार्थ

लौकिकानाम्- सामान्य मनुष्यों के, साधूनाम्- सज्जनों की, वाक्- वाणी, अर्थम्- पदार्थ को, अनुवर्तते- अनुसरण करती है, पुनः- किन्तु, आद्यानाम्- (त्रिकालदर्शी) वैदिक ऋषियों की, ऋषिणाम्- (तपस्वीयों) वैदिक ऋषियों की, वाचम्- वाणी को, अर्थः- पदार्थ, अनुधावति- अनुसरण करती है।

अर्थ

लौकिक सत्पुरुषों की वाणी पदार्थ का अनुसरण करती है परन्तु (त्रिकालदर्शी) वैदिकऋषियों की वाणी का अनुसरण स्वयं अर्थ करता है।

समास

लौकिकानाम्- लोके विदिता इति लौकिकाः, तेषाम्

आद्यानाम्- आदौ भावाः इति आद्याः, तेषाम्

अलङ्कार

सामान्य सज्जन अपेक्षा वशिष्ठ आदि वैदिक ऋषियों का उत्कर्ष वर्णित होने के कारण व्यतिरेक अलङ्कार है। (आधिक्यमुपमेयस्योपमानान्न्यूनताऽथवा व्यतिरेकः।)

गुण- 'प्रसाद'

रीति- 'लाटी रीति' (लाटि च मृदुभिः पदैः)

छन्द- 'अनुष्टुप्'

(श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम्। द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥)

विशेष अंश- 'विष्णुपुराण' के अनुसार ब्रह्मा के मानसपुत्र मन्त्रद्रष्टा ऋषियों को आद्य ऋषि कहते हैं। वे – भृगु, पुलस्त्य, पुलहक्रतु, अंगिरस, मरीचि, दक्ष, अत्रि और वशिष्ठ है।

इस पद्य में मुखसन्धि का विलेभन नामक सन्ध्यङ्ग है। गुणाख्यानं विलोभनम्। जिसमें गुणों का वर्णन किया जाता है।

नायक द्वारा कथावीज का आधान होने के कारण समाधानम् नामक सन्ध्यङ्ग भी है। 'वीजस्यागमनं यत्तु तत्समाधानमुच्यते'।

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा॥

अन्वय

लोकानाम् आराधनाय स्नेहं दयां च सैख्यं च यदि वा जानकीम् अपि मुञ्चतः मे व्यथा नास्ति।

शब्दार्थ

लोकानाम्- प्रजायों के, आराधनाय- अनुरञ्जन के लिए, स्नेहम्- अनुराग को, दयाम्- करुणा को, सैख्यं- सुख को, यदि वा- और, जानकीम्-सीता को, अपि- भी, मुञ्चतः – छोड़ते हुए, मे- मुझको, व्यथा- पीडा, नास्ति- नहीं होती है।

अर्थ

प्रजायों के अनुरञ्जन के लिए स्नेह, दया, सुख और सीता को भी परित्यग करते हुए मुझे कोई व्यथा नहीं होती है।

समास

सौख्यम्- सुखमेव सौख्यम्।

अलङ्कार

इस पद्य में स्नेह दया और सीता का 'मुञ्चत' क्रियापद से सम्बन्ध होने के कारण दीपक अलङ्कार है। जानकीमपि इस पद से अर्थापत्तिरलङ्कार तथा तुल्ययोगिता अलङ्कार भी है।

गुण- 'प्रसाद'

शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः। व्यप्नोत्यन्यत्प्रसादोऽसौ सर्वत्र हितस्थितिः॥

रीति- 'लाटी रीति'

(लाटि च मृदुभिः पदैः)

छन्द- 'अनुष्टुप्'

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम्। द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

विशेष

इस श्लोक का वक्ता नाटक के नायक राम है। कुलगुरु वसिष्ठ के आदेश अनुसार वंश परम्परा, राजकर्तव्य और प्रजाकल्याण के लिए स्नेह, सुख तथा जानकी को भी त्याग करने की इच्छा प्रकट करता है।

इसके द्वारा राम का लोकानुरञ्जन की भावना अभिव्यक्त होता है- जानकीमपि मुञ्चतो मे व्यथा नास्ति।

सीता भी एक ऐसी स्त्री है जो राम के मुख से अपनी परित्यग की बात सुनकर विक्षुब्ध न होकर राम की कर्तव्य निष्ठा की प्रशंसा करती है।

उत्पत्तिपरिपूतायाः किमस्याः पावनान्तरैः ।
तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः ॥

अन्वय

उत्पत्तिपरिपूतायाः अस्याः पावनान्तरैः किम्, तीर्थोदकं च वह्निः च अन्यतः शुद्धिं न अर्हतः ।

शब्दार्थ

उत्पत्तिपरिपूतायाः- जन्म से ही पवित्र, अस्याः- सीता के, पावनान्तरैः- पवित्र करने वाले पदार्थ से, किम्- क्या, तीर्थोदकम्- तीर्थ के जल, च- और, वह्निः- अग्नि, अन्यतः- दूसरे पदार्थ से, शुद्धिं- निर्मलता को, न- नहीं, अर्हतः- पाते है ।

अर्थ

जन्म से ही अत्यन्त पवित्र सीता का अन्य पवित्रताकारक पदार्थ से क्या (प्रयोजन है) तीर्थजल और अग्नि किसी दूसरे पदार्थ से शुद्धि की अपेक्षा नहीं रखते है ।

समास

पावनान्तरैः –अन्यानि पावनानि पावनान्तराणि, तैः

तीर्थोदकम्- तीर्थस्य उदकम्

अलङ्कार

इसमें सीता, तीर्थोदक और वह्नि के साथ बिम्ब-प्रतिबिम्ब सम्बन्ध होने के कारण दृष्टान्त अलङ्कार है। (दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम्) और 'पवित्रता' रूप सामान्य धर्म 'तीर्थोदक' तथा 'वह्नि' रूप भिन्न भिन्न शब्द द्वारा कहने के कारण यहां प्रतिवस्तूपमा अलङ्कार भी है।

गुण- 'प्रसाद'

शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः। व्यप्नोत्यन्यत्प्रसादोऽसौ सर्वत्र हितस्थितिः॥

रीति- 'लाटी रीति'

(लाटि च मृदुभिः पदैः)

छन्द- 'अनुष्टुप्'

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम्। द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

प्रसङ्ग

सीता का मनोविनोदनार्थ अर्जुन नामक चित्रकार द्वारा चित्रपट का निर्माण हुआ है। इस चित्रपट में सीता की अग्निपरीक्षा तक की घटना चित्रित है, ये सुनकर अग्निपरीक्षा से व्यथित राम सीता की पवित्रता विषये अपनी अभिमत इस पद्य से प्रकट करते हैं।

विशेष

सीता अयोनिजा होने के कारण उत्पत्ति से ही पवित्र है। इसलिए अन्य पवित्रकारक पदार्थ से शुद्धि की अपेक्षा नहीं रखती है।

वस्तुतः लङ्का में सीता की अग्निपरीक्षा का कारण केवल लोकानुरञ्जन ही है। क्योंकि राम को सीता की पवित्रता के वारे में कोई शंका नहीं है।

धन्यवादाः

विश्वजित् वर्मन
सहायक-आचार्य, संस्कृत विभाग
biswajitbarman@mgcub.ac.in